

भाग्य बताएंगी सफेद रक्त कणिकाएं

मासूम बी- कोशिकाएं, WBC का एक प्रकार हैं जो हमेशा ऐसे रोगाणुओं पर आक्रमण के लिए उत्साहित और तैयार रहती हैं जिनका सामना उन्होंने पहले न किया हो। जिस व्यक्ति के पास इनकी जितनी बड़ी आरक्षित सेना होगी वह नए संक्रमणों से लड़ने में उतना ही सक्षम होगा और स्वाभाविक तौर पर अधिक लंबी उम्र प्राप्त करेगा।

अगर आप जानना चाहते हैं कि आप कितना जिएंगे, आपका स्वास्थ्य कैसा रहेगा, तो आपको न भविष्यवक्ता तोते के पास जाने की ज़रूरत है और न ही हस्तरेखा पढ़वाने की। क्योंकि बहुत जल्द वैज्ञानिक आपकी सफेद रक्त कणिकाओं का नमूना देखकर आपकी संभावित आयु का अंदाज़ा लगा सकेंगे। आम तौर पर यह देखा जाता है कि लंबी उम्र तक जीने वाले दम्पति की संतानें भी लंबी उम्र प्राप्त करती हैं, लेकिन ऐसा क्यों होता है यह कोई नहीं जानता।

जैसा कि सभी जानते हैं, सफेद रक्त कणिकाएं (WBC) संक्रमण से बचाती हैं। संक्रमण का सीधा सम्बंध बीमारियों से है। इस प्रकार WBC लंबी उम्र का वरदान देने में सक्षम हैं। पोलेर्मा विश्वविद्यालय इटली की सोन्या वैस्टो और उनके सहयोगियों के अध्ययन से लगता है कि इन कोशिकाओं में ही लंबी उम्र का राज छुपा है।

अध्ययन के लिए टीम ने 75-90 वर्ष के 45 पुरुषों और महिलाओं के WBC के नमूने इकट्ठे किए। इनमें से 25 लोग ऐसे थे जिनके माता-पिता में से कम से कम एक ने 100 वर्ष की आयु पाई थी जबकि दूसरे की मृत्यु इटली की औसत आयु (जो पुरुष के लिए 67 और महिलाओं के लिए 72 वर्ष है) से कम उम्र में हो गई थी। शेष 20 के माता-पिता की मृत्यु औसत आयु के पूर्व ही हो चुकी थी।

शोधकर्ताओं ने दोनों समूहों के नमूनों में नाइव यानी मासूम बी-कोशिकाओं की संख्याओं में अंतर पाया। मासूम बी- कोशिकाएं, WBC का एक प्रकार हैं जो उनके रक्त के नमूने में ज़्यादा संख्या में थीं। लॉस एंजिल्स में मेथुसेलाह फाउण्डेशन द्वारा वृद्धावस्था पर आयोजित सम्मेलन में वैस्टो ने कहा कि प्रयोगों के दौरान उन लोगों के WBC के नमूने में मासूम बी- कोशिकाओं की संख्या ज़्यादा मात्रा में पाई

गईं जिनके माता या पिता शतायु हो सके थे। चूंकि शोध कार्य अभी प्राथमिक चरण में है, इसलिए उन्होंने विस्तार से कुछ नहीं बताया।

अभी तक प्राप्त परिणामों से इतना तो समझा ही जा सकता है कि बी- कोशिकाएं हमारे प्रतिरक्षा तंत्र का महत्वपूर्ण तत्व हैं जो एण्टीबाडीज़ का तेज़ी से निर्माण करती हैं और यही एण्टीबाडीज़ हमारे शरीर में बाहर से प्रवेश करने वाले रोगजनक सूक्ष्मजीवों (जैसे बैक्टीरिया वायरस आदि) से लड़ने का काम करती हैं। मासूम बी-कोशिकाओं की प्रकृति परिपक्व बी-कोशिकाओं से अलग है क्योंकि परिपक्व बी-कोशिकाएं सिर्फ उन्हीं रोगाणुओं पर हमला कर सकती हैं जिनका सामना वे पहले भी कर चुकी हैं। दूसरी ओर, मासूम बी-कोशिकाएं हमेशा ऐसे रोगाणुओं पर आक्रमण के लिए उत्साहित और तैयार रहती हैं जिनका सामना उन्होंने पहले न किया हो। वैस्टो मानती हैं कि जिस व्यक्ति के पास इनकी जितनी बड़ी आरक्षित सेना होगी वह नए रोगों के संक्रमण से लड़ने में उतना ही सक्षम होगा और स्वाभाविक तौर पर अधिक लंबी उम्र प्राप्त करेगा।

वैस्टो आशा करती हैं कि मासूम बी-कोशिकाओं की गणना लोगों की आयु का अनुमान लगाने में कारगर साबित हो सकेगी, साथ ही कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के वृद्धावस्था विज्ञानी और मेथुसेलाह फाउण्डेशन के अध्यक्ष ऑब्रे डिग्रे कहते हैं कि मासूम बी-कोशिकाएं आयु का प्रथम फिज़ियोलॉजिकल मार्कर हैं। इसके बावजूद बुझे मन से कहना पड़ रहा है कि कोई व्यक्ति कितनी आयु प्राप्त कर सकेगा इसका अनुमान लगाने के लिए यह बहुत आंशिक सफलता है। और अभी हम यह भी नहीं कह सकते कि इन उपलब्धियों के द्वारा हम लोगों की आयु बढ़ा सकेंगे। मगर संभावना तो है ही। (स्रोत फीचर्स)